

વિક્રમ સંવત-૨૦૩૬, શ્રાવણ સુદ-૧૧, શુક્રવાર, તા. ૨૨-૮-૧૯૮૦  
વચનામૃત-૨૪૧, ૨૪૪, ૨૫૧. પ્રવચન નં. ૧૫

**ઓહો! યહ તો ભગવાન આત્મા! સર્વાંગ સહજાનંદકી મૂર્તિ! જહાંસે દેખો વહાં આનંદ, આનંદ ઔર આનંદ. જૈસે મિશ્રીમેં સર્વાંગ મિઠાસ વૈસે હી આત્મામેં સર્વાંગ આનંદ. ૨૪૧.**

વચનામૃત, કિસીને ઈસમેં લિખા હૈ, ઉસ અનુસાર પઢતે હૈં. કોઈ કાગજ રખકર ગયા હૈ. ‘ઓહો..! યહ તો ભગવાન આત્મા!’ જહાં દષ્ટિકા વિષયકા અનુભવ હુઆ, સમ્યજ્ઞર્શન હોને પર આત્માકે આનંદકા અનુભવ હોતા હૈ. ઈસ આનંદકે અનુભવમેં, ‘ઓહો..! યહ ભગવાન આત્મા! સર્વાંગ સહજાનંદકી મૂર્તિ!’ આહાહા..! તેરી દષ્ટિ વહાં લગા દે. ભગવાન અહો! આશ્ચર્યકારી, સહજાનંદ સ્વરૂપ. સહજાનંદ સ્વામી નારાયણકે નહીં. સહજ સ્વાભાવિક અતીન્દ્રિય આનંદકી મૂર્તિ પ્રભુ હૈ. તો કહતે હૈં, ‘જહાંસે દેખો વહાં આનંદ, આનંદ ઔર આનંદ.’ આહાહા..! ભગવાન આત્માકો આનંદમય દેખનેસે જહાંસે દેખો વહાં આનંદ હી આનંદ અંદર હૈ. અંદરમેં કોઈ વિકલ્પ, દુઃખ, રાગ હૈ નહીં. આહાહા..! સહજાનંદકી મૂર્તિ. સહજ આનંદકા સ્વરૂપ પ્રભુ. ‘જહાંસે દેખો વહાં આનંદ, આનંદ ઔર આનંદ.’ આહાહા..!

‘જૈસે મિશ્રીમેં...’ શક્કરમેં ‘મિશ્રીમેં સર્વાંગ મિઠાસ, વૈસે હી આત્મામેં સર્વાંગ આનંદ હૈ.’ આહા..! જૈસે મિશ્રીમેં સર્વાંગ મિઠાસ હૈ, વૈસે ભગવાન આત્મામેં સર્વાંગ અતીન્દ્રિય આનંદ ભરા હૈ. અતીન્દ્રિય આનંદ સમ્યજ્ઞર્શનકા ધ્યેય-વિષય હૈ. ઉસકે ધ્યેયસે સમ્યજ્ઞર્શન હોતા હૈ. આહાહા..! તબ સમ્યજ્ઞર્શનમેં ઐસા ભાવ હુઆ, અહો..! સહજાનંદકી મૂર્તિ પ્રભુ! જહાં દેખો વહાં આનંદ, આનંદ ઔર આનંદ અતીન્દ્રિય.

મિશ્રીમેં જહાં દેખો વહાં મિઠાસ (ભરી હૈ). શક્કર. વૈસે ભગવાન આત્મા અતીન્દ્રિય આનંદકા પિંડ હૈ. શક્કર જૈસે મિઠાસકા પિંડ હૈ. વૈસે ભગવાન આત્મા અતીન્દ્રિય આનંદકા પિંડ હૈ. વહી સમ્યજ્ઞર્શનકા વિષય હૈ. આહાહા..! ઉસ વિષયમેં આનંદ આતા હૈ, તબ સમ્યજ્ઞષ્ટિકો ઐસા ભાસતા હૈ કિ અહો..! યહ આત્મા! અકેલે આનંદસે ભરા હુઆ, જિસમેં કોઈ અંશ માત્ર સંસાર, સંસારકા ઉદયભાવ, અરે..! ઉપશમ, ક્ષયોપશમ, ક્ષાયિકભાવ ભી જિસમેં નહીં હૈ. આહાહા..! ઐસે ભગવાન આત્માકી

दृष्टि जहाँ अंतर दुर्घ, तो जैसे मिश्रीमें चारों ओरसे मिठास (भरी) है. वैसे भगवानमें चारों ओरसे अतीन्द्रिय आनंद (भरा) है. आलाला..! सूक्ष्म बात है, प्रभु! मूल बात तो यह है.

सम्यग्दृष्टि अर्थात् श्रद्धामात्र जैसे नहीं. आलाला..! देव-गुरु-धर्मकी श्रद्धा या तत्त्वार्थकी श्रद्धा, उतने मात्र नहीं. अंतरमें अतीन्द्रिय आनंद स्वप्नमें अनुभवका आनंद लेकर श्रद्धा (दुर्घ लो). आलाला..! अतीन्द्रिय आनंदका सर्वांग पूर्ण प्रभु, अतीन्द्रिय आनंदसे भरा पडा जहाँ देओ वहाँ नजरमें आनंद आता है. उसका नाम आत्मा और उसका नाम सम्यग्दर्शन. उसका विषय यह आत्मा है. आलाला..! सूक्ष्म बात है, प्रभु! बहिनने तो अंदरमें अनुभव करते-करते बोले हैं. ऐसी भाषा भी बाहर आनी मुश्किल है. आलाला..! कोई बार जैसे शब्द बोल दिये. आलाला..!

‘मिश्रीमें सर्वांग मिठास...’ मिश्री तो अनंत परमाणुका पिंड है. शक्करकी डली अनंत परमाणुका पिंड है. यह तो एक ही द्रव्य है. आलाला..! एक द्रव्यमें आनंदका आनंद, अतीन्द्रिय आनंदमय प्रभु असंख्य प्रदेशमें पूर्ण अतीन्द्रिय आनंद भरा है. उस आनंदका अनुभव करके सम्यग्दृष्टिको सर्वांग आनंद दिभता है. आलाला..! २४१ (पूरा हुआ). फिर २४४. २४४ लिया है.

**ओहो! आत्मा तो अनंत विभूतियोंसे भरपूर, अनंत गुणोंकी राशि, अनंत गुणोंका विशाल पर्वत है! चारों ओर गुण ही भरे हैं. अवगुण एक भी नहीं हैं. ओहो! यह मैं! जैसे आत्माके दर्शनके लिये जुबाने कभी सस्या कौतूहल ही नहीं किया. २४४.**

‘ओहो! आत्मा तो अनंत विभूतियोंसे भरपूर,...’ आलाला..! आत्मा यानी क्या है प्रभु! चैतन्यकी यमत्कृति अनुभवमें सम्यग्दर्शन लो, तब उसमें यमत्कृति क्या है, उसका पता मिल जाय तो दुनियाकी सब उठ जाय. सब बातमेंसे, सब विकल्पमेंसे मिठास उठ जाय और सबमें ज्ञाता-दृष्टा लो जाय. आलाला..! अपने आनंद स्वप्नमें जहाँ अनुभव हुआ तो पूरी दुनियासे उदास हुआ. दुनियामें ठीक-अठीक ऐसी कोई चीज है नहीं. क्योंकि ज्ञेय है वह एक प्रकारका है. ज्ञान एक प्रकारका ज्ञेय स्वप्न ज्ञानता ही है. कोई अख्या या बुरा ऐसा उसमें है नहीं. ऐसी दृष्टि आनंदकी होती है तब होती है. आलाला..! सूक्ष्म बात है, प्रभु!

बाह्य प्रवृत्तिके आगे अंतर आनंदकी किमत उठ गयी. आलाला..! बाह्य प्रवृत्तिके

प्रेममें पुण्यकी क्रियाके-शुभकी क्रियाके प्रेममें आनंदस्वरूप भगवान उस शुभके पीछे पडा है, उसकी किमत-महत्ता-महिमा-उड गઈ और पुण्यकी महिमा रह गई. अनादि कालसे. नौवीं त्रैवेयक अनंत बैर गया साधु होकर. कितनी क्रिया कि वर्तमानमें तो ऐसी क्रिया है भी नहीं. फिर भी आनंदस्वरूप भगवान, उसके तलमें नहीं गया. पर्यायका तल है, तलिया.. तलिया समजते हो? भाषा है? अंदर पर्यायके तलमें दृष्टि जहां रुकती है, तब आनंद, आनंद, आनंदका अनुभव रहता है. इस आनंदके आगे सर्वार्थसिद्धके देवका आनंद भी जिसके आगे, सम्यग्दर्शन है उतना आनंद है, परंतु उससे आगे बढ़कर जो पंचम गुणस्थान हुआ हो आत्मामें... आलाहा..! सर्वार्थसिद्धका देव समझिती अकावतारी, अक भवतारीको जो आनंद है, उससे पंचम गुणस्थानवाला श्रावक, सख्या श्रावक, उसका आनंद सर्वार्थसिद्धके देवसे भी आनंद बढ़ गया है. आलाहा..! जो अक भवतारी है. कितने तो बारह अंगधारी है. सर्वार्थसिद्धमें भी बारह अंगधारी. क्योंकि यहां बार अंगका ज्ञान हुआ था, वह बारह अंगका ज्ञान लेकर गये. और उसका आनंद भी साथमें है. उसके आनंदसे पंचम गुणस्थानवाला श्रावक, जो सख्या श्रावक है, आत्माका आनंदका अनुभव सहित स्थिरता, आंशिक शांति बढ़ गई है. जो शांतिकी स्थिति चौथे गुणस्थानमें है, उससे पंचममें शांति और आनंद थोडा बढ़ गया. आलाहा..! इसलिये..

‘ओहो..! आत्मा तो अनंत विभूतियोंसे भरपूर है.’ अनंत विभूतियोंसे भरपूर है. शब्द क्या काम करे? ओहो..! शब्दकी जहां गंध नहीं. कल आया था न? स्वर आत्मामें है नहीं. आलाहा..! विकल्प और यह स्वर शब्द स्वरूपमें है नहीं. यहां स्वर क्या काम करे? आलाहा..! शब्द जड, भगवान चेतन. दोनों विद्ध्य. दुश्मनके पास सङ्घर्षके गुण बुलाये तो वह कितना बोले? आलाहा..! जैसे भगवान आत्माका अनुभव होने पर, वाणी जड है वह कितना काम करे? आलाहा..! जो अनुभवमें आता है, वह बात वाणी कह सकती नहीं. वाणी जड विद्ध्य है. आलाहा..! चैतन्य और परमाणुके बीच तो अत्यंत अनंत अभाव है. भगवानकी वाणी भी जड है. आलाहा..! वाणीमें कितना आता है? अनंतवें भागमें आता है, ऐसा पाठ है.

भगवान सर्वज्ञदेव अतीन्द्रिय आनंदकी पूर्ण मूर्ति भव गई है. पूरा कमल खिल गया है. आलाहा..! बत्तीस पंजुडीसे जैसे कमल खिलता है, वैसे भगवान अनंत गुणसे खिल गया है. जैसे सर्वज्ञ भगवान, उनकी वाणी भी आत्मासे तो विद्ध्य है. आलाहा..! वाणीमें कितना आवे? वाणी तो जड, अज्जव, रूपी है. ‘भगवान आत्मा अनंत विभूतियोंसे भरपूर...’ आलाहा..! वह तो सम्यक् हो तब उसे मालूम

पडे कि यह चीज क्या है. आलाला..! और वह चीज करनेकी पहली चीज है. आत्मा तो 'अनंत विभूतियोंसे भरपूर...' आलाला..! कोई भी विभूत-ज्ञान, दर्शन, आनंद, शांति, अस्तित्व, वस्तुत्व, प्रभुत्व, स्वच्छत्व आदि. अरे..! सर्वज्ञ, सर्वदर्शि और सर्व वीर्य आदि पूर्ण भरा है. अंतरमें सर्वज्ञशक्ति पूर्ण पडी है. सर्वज्ञशक्ति सर्वदर्शि शक्ति, पूर्ण वीर्य शक्ति, पूर्ण वीर्य-बल. आत्मानुभवमें जो बलका अनुभवका अंश आता है, वह पूरा अकेले बलका अनुभव है. वह अनंत बलका धनी है. ओहोहो..! आत्माकी बात सुनी नहीं, प्रभु! सुनी हो तो दूसरे कानसे निकाल दी है. करना तो यह है कि नहीं? चाहे जितनी बात करे, करना तो यह है. आलाला..! दोनोंमें आया न? पहलेमें भी ओहो..! आया था. इसमें भी अहो..! (आया).

आत्मा तो 'अनंत विभूतियोंसे भरपूर...' अनंत विभूतिसे भरपूर. दुनियाके पास कितने पैसे हों? अरब रुपया. अरे..! हमारे समयमें तो सौ अरबको भर कलते हैं और सौ भरको निभर कलते हैं. भर, निभर, मलापच, ... जैसे बोल आते हैं. स्कूलमें ८० साल पहले यह चलता था. ... तक संख्या चलती थी. सौ अरबका अेक भर. तो ... भी क्या है? आलाला..! अरबकी तो बात क्या, लेकिन ... भी क्या है? यह तो अनंत.. अनंत.. अनंत.. भाषा शब्दमें अनंत आता है, परंतु वाच्य जो अनंत है... आलाला..! अनंत-यह वाचक शब्द है. जैसे शक्कर शब्द है, उस शब्दमें शक्कर नहीं है और शक्कर है उसमें शब्द नहीं है. जैसे अनंत विभूति शब्द है, वह भगवानमें नहीं है. आलाला..! शक्करमें शक्कर शब्द नहीं है और शब्दमें शक्कर नहीं है. वैसे वाणीमें भगवान नहीं और भगवानमें वाणी नहीं. आलाला..! ऐसी बात है, प्रभु!

'ओहो..! आत्मा तो अनंत विभूतियोंसे भरपूर, अनंत गुणोंकी राशि,...' अनंत गुणका ढेर-राशि पडी है. अड़पी है, क्षेत्र भले छोटा हो. अरे..! निगोदका आत्मा हो, तो भी ऐसा ही है. पर्यायमें अंतर है. आत्मा तो अनंत विभूतिसे भरा पडा है और अनंत गुणोंकी राशि है. लेकिन उसको मावूम नहीं. यहां तो मावूम है वह कलते हैं कि अनंत गुणोंकी राशि है. ज्ञान हुआ, वस्तुका ज्ञान हुआ, वस्तुकी प्रतीति हुई, वस्तुका ज्ञानमें पूर्ण ज्ञेय बन गया, ज्ञानमें पूरी चीज ज्ञेय पूर्ण बन गया. उसे वाणी कहती है, वह वाणी भी उसमें तो है नहीं. आलाला..! कितनी बात करे? आलाला..!

'अनंत गुणोंकी राशि, अनंत गुणोंका विशाल पर्वत है!' आलाला..! अड़पी सिद्धान्त भगवान अड़पी शांतिका महा पर्वत है. अनंती विभूति, अनंत शक्ति,

अनंत गुण उसका महाप्रभु पर्वत है. आलाला..! पर्वतमें तो अनंत परमाणु हैं. वर तो अनंत द्रव्य हैं, वर अरु द्रव्य है. आलाला..! द्रव्यमें भी अनंत-अनंत विभूति ँतनी है कि कोरु संख्यामें पार न आवे. आलाला..! पर्वतकी तो उपमा दी है. पर्वत तो अनंत परमाणुका पिंड रूंध है, रूंध. अरु द्रव्य नहीं है. आलाला..! भगवान तो अरु द्रव्य है. पर्वत तो प्रभु! अनंत-अनंत परमाणुका पिंड पर्वत. उसमेंसे जैसे पानी ऒरता है, जैसे भगवान अरु-अरु द्रव्य अनंत गुणका भंडार, उसकी अंतर दृष्टि लुई तो समय-समयमें आनंद ऒरता है. आलाला..! अतीन्द्राय आनंदका वेदन समकितकी समय-समयमें वेदन है. आलाला..!

ऐसा भगवान 'चारों ओर गुण ही भरे हैं.' आलाला..! चारों ओर अर्थात् किसी भी ओरसे देओ अरुके गुण ही भरे हैं. विभूति कल, अनंत गुणका पर्वत कल, अनंत गुणकी राशि कल और चारों ओर गुण ही भरे हैं, ऐसा कल. आलाला..! देओ! वर वयनामृत! कल न?

गोपनाथका कोरु अरु साधु है. गोपनाथ है. उसके लथमें वर पुस्तक गया. पुस्तक बलुत छप गये हैं. लगलग ८०००० छप गये हैं. और २०००० बाकी है. अरु लथ कल था. जब पहली बार लथमें आया था, तब रामलुभाईको कल, तीस लथ पुस्तक वलंसे छपे हैं, अभी तक किसीको कल नहीं कि पुस्तक छपवाओ. ... वर पुस्तक लथमें आया (तो कल), ओलो..! अरु लथ पुस्तक छपवाओ. लगलग ८०००० तो छप गये हैं. आलाला..! ऐसी चीज. मठवाला, गोपनाथमें अन्यमति मठ (है). और वलं अरु प्रोफेसर है, लवनगर. रूकुलमें बडा ब्राह्मण. उसे वर दिया. और वान्यन करुके पत्र आया, महाराज! आपने क्या दिया! वर क्या है? उसमें कितनी चीज भरी है, वर जब मैं पढता हूं तब मालूम पडता है. वर जब उसके गुरुके पास जाता था, गोपनाथ, जब वर गया तो उसके लथमें वर पुस्तक था. गोपनाथके जो गुरु थे उसके लथमें वर पुस्तक था. ँस पुस्तककी महिमा करने वलं गया. वलं गया तो उसके लथमें वर पुस्तक था. किर दोनों प्रशंसा करते थे. पत्र आया था. लम कुछ नहीं कल सकते. चाले जितनी प्रशंसा करे, लेकिन वर पुस्तक क्या है! उपनिषदमें नहीं है ऐसी बातें ँसमें आ गयी है. ऐसा उसके पत्रमें आया था. आलाला..! मध्यस्थतासे अभिमान छोडकर, मैं कुछ जानता हूं और मैं कुछ कियाकांड करनेमें विचक्षण हूं, उसे वर बात बैठनी कठिन पडे. वर बात बैठनी, अंदरमें बैठे... आलाला..!

वलं तो अनंत गुण भरे हैं. 'अवगुण अरु भी नहीं है.' वस्तुमें अवगुण

अेक नलीं, अवगुण तो पर्याय है. गुणकी विपरीत पर्याय है. ँसलिये प्रश्न होता है न, कि सिद्धमें आठ गुण कले, तो क्या वल गुण है? सिद्धमें आठ गुण कले न? आठ कर्मके नाशके आठ गुण. वल गुण नलीं है, पर्याय है. गुण उत्पन्न नलीं होता. आलाला..! सिद्ध आठ गुण सहित, व्यवहारसे. निश्चयसे तो अनंत गुण सहित. आलाला..! आठ कर्म थे, उसका निमित्तका अभाव ँकर यहां दशा प्रगट लुं तो आठ गुण कलनेमें आये. वल गुण नलीं है. गुण तो त्रिकाल होते हैं. आठ गुण कलनेमें आते हैं, वल पर्याय है. सिद्धके ँतने गुण है, ँतने गुण हैं, वल सल पर्याय है. गुण तो ध्रुव है. पर्याय प्रगट होती है, गुण प्रगट नलीं होता. आठ पर्याय तो प्रगट लुं है. कर्मका नाश ँकर प्रगट लुं है. वल तो पर्याय है. अरे..! सिद्ध स्वयं पर्याय है. आलाला..! वल ली अेक लेस है.

लगवान अनाद्विअनंत.. आलाला..! अनाद्विअनंत अनंत गुणका लंडार, उसके पास सिद्धपद तो अेक लेस है, लेस है. आलाला..! वल ली समयसारमें मोक्ष अधिकार पूर्ण करके कला, मोक्षका लेस यला गया. मोक्षका लेस आया था. अधिकार है, मोक्ष अधिकार. मोक्ष यला गया अर्थात् जन लिया. वस्तु तो त्रिकाली है. मोक्ष तो अेक समयकी पर्याय है. आलाला..! मोक्षकी पर्याय वैसी की वैसी साद्विअनंत काल रहेगी, परंतु वल नलीं. जे उत्पन्न लुं वल नलीं रहेगी. जे उत्पन्न लुं है वल तो अेक समय ली रहेगी. क्योंकि उत्पाद-व्यय-ध्रुव युक्तं सत्. सत् जे है वल ध्रुव है. और उत्पाद-व्यय है वल पर्याय है. जितने उसको गुण प्रगट लुं अे उसको गुण कला. वल तो पर्याय है.

यहां कलना है, अवगुण. गुणकी पर्यायको गुण कला. तो गुणकी विद्ध पर्यायको अवगुण कला. अवगुण ली पर्याय है. आलाला..! समजमें आया? यहां अवगुण कला है न? अवगुण तो वल गुण है? अवगुण तो गुणकी विद्ध अेक पर्याय है. अवगुण विद्ध पर्याय (है). जे पर्याय प्रगट लुं उसको गुण कला. लेकिन वल गुण नलीं है. गुण तो त्रिकाली पडा है अंदर. उसमें कों ललचल होती ली नलीं. जैसा है अनाद्वि, अैसा अनंत काल (रलता है). निगोदसे लेकर सिद्ध तद द्रव्य स्वभाव तो जैसा है वैसा है. त्रिकाल अेकूप है. उसमें इेरकार लिलकुल होता नलीं. आलाला..! याले तो सिद्धपर्याय लो तो ली द्रव्यमें इेरकार नलीं होता. याले तो निगोद लो तो ली द्रव्यमें इेरकार नलीं होता. आलाला..! अैसी द्रव्यकी विभूति (है). उसमें 'अवगुण अेक ली नलीं है.' आलाला..!

'ओलो! यल मैं! अैसे आत्माके दर्शनके लिये ज्वने कली...' लूतकालमें 'सय्या

कुतूहल ही नहीं किया.' आलाहा..! कुतूहल करे, क्या है यह चीज? धतनी-धतनी आत्माकी प्रशंसा करते हैं तो यह चीज है क्या? ऐसा कुतूहल भी कभी नहीं किया. आलाहा..! अपनी चीजको देखनेका कुतूहल नहीं किया. आलाहा..! 'ऐसे आत्माके दर्शनके लिये ज़वने कभी...' भूतकालमें. भूतकाल अनंत कालमें कुतूहल ही नहीं किया. अनंत ज़व अनंत कालसे उसको देखनेको कुतूहल ही कभी नहीं किया.

कोई रानी निकली हो तो कुतूहल करता है. क्या कहते हैं? ओजलमें. भावनगरकी रानी ओजलमें थी. वह एक बार निकली, भुझी हो गई. ओजल निकाल दिया. गांवके लोग सब ठाठ देभे. बाईने ओजल (निकाल दिया). मैंने भी.. यह वडिया है न? वडिया. वडियाके दरबार आदि सब आते थे. दरबार बहुत होशियार था. उसके पास जो राजकुमार था, उसके पास पढनेको आता था. वडिया. आसपासके राजकुमार. उन्होंने एक बार विनती की, महाराज! मेरे घर मेरी स्त्रीके पास आहार लेनेको (पधारिये). लोगोंको ऐसा लगे, उसकी स्त्री कैसी होगी? अंदर आहार लेनेको गये तो (शरीर देभो तो) लटक गया था. दिभावका कुछ ठिकाना नहीं. लोगोंको महिमा (आये). लेकिन अंदर देभा तो कुछ नहीं, कुछ नहीं था बेचारी. बोली, महाराज! शरीर ऐसे लटक गया था. चमडी... कोई आकारका दिभाव नहीं, सुंदर नहीं, कुछ नहीं. दुनियाको ऐसा लगे, राजकी रानी कैसी होगी?

वैसे यहां नहीं है. आलाहा..! प्रभु! यह तो अनंत गुणका वैभव कोई अलौकिक है. जिसको अंतरमें देखनेमें आता है, वह कभी देभा नहीं. कभी सुना नहीं. कभी कुतूहल किया नहीं, देखनेका कुतूहल किया नहीं. यह क्या चीज है? ज्ञाननेमें मैं सबको ज्ञानता हूं, लेकिन ज्ञाननेवाला कौन है? आलाहा..! यह है, यह है, यह है. लेकिन यह है, ऐसा ज्ञाना किसने? उर्ध्वता नामका एक गुण है. आता है न? समता. समता, रमता, उर्ध्वता. श्लोक आता है. समयसार नाटकमें. उर्ध्वताकी परिभाषा श्रीमद्ने की है. पुस्तकमें उर्ध्वताकी परिभाषा की है.

कोई भी चीज ज्ञाननेके पहले विचारनेके पहले ज्ञान न हो तो ज्ञाने कौन? कोई भी चीज, ज्ञानकी मुष्यता न हो तो ज्ञाने कौन? तो वास्वतमें तो ज्ञानमें यह चीज ज्ञात होती है, वह तो ज्ञान ज्ञात होता है. आला..! यह चीज, जिसकी सत्तामें यह सब दिभता है, वह परको स्पर्श किये बिना, परको स्पर्श किये बिना अपनी पर्यायके सामर्थ्यसे स्वपरप्रकाशक सामर्थ्यसे सब देखनेमें आता है. जिसकी एक पर्यायमें धतना-धतना देखनेमें आये, उसको छूअे बिना अपने दिभनेमें आये, तो उसके गुणका क्या कहना? प्रभु! आलाहा...! उसका गुण जो त्रिकाल, जिसकी

पर्यायमें यह ज्ञाननेमें आता है, ऐसा है नहीं. ज्ञानकी पर्याय ज्ञाननेमें आती है. क्यों? कि परद्रव्यको तो कभी छूता नहीं. ज्ञान है वह तो परद्रव्यको कभी छूता नहीं. फिर भी परद्रव्य संबंधी अपना ज्ञान अपनेसे उत्पन्न हुआ है. वह भी कोई अलौकिक चीज है कि अनंतको जाने. तो उसके गुणका क्या कलना! आला..!

यह कहते हैं, 'ऐसे आत्माके दर्शनके लिये श्रवण कभी सख्या कौतूहल...' सख्या शब्द क्यों लिया है? कुतूहल तो ऐसे करता है कि कैसा है? परंतु सख्या कुतूहल नहीं किया. कुतूहलके साथ सख्या शब्द विशेष लिया. आला..! बलिनके शब्द हैं. 'कभी सख्या कौतूहल ही नहीं किया.' आला..! क्या चीज है यह? सबको अंक ओर रभो, यह चीज क्या है? इस चीजकी पीछान बिना और अनुभव बिना सब क्रियाकांड आदि नौवीं त्रैवेयक गया, अनंत भव जैसे ही रहे. अनंत-अनंत भव निगोदमें भी गया. द्रव्यलिंगी मुनि.. लिंगपालुडमें ऐसा पाठ है, द्रव्यलिंग कितनी बार लिया? कि अनंत बैर. और द्रव्यलिंग लेनेके बाद भी अंक कणु जाली नहीं है कि जिसमें अनंत जन्म-मरण नहीं किये हो. ऐसा लिंगपालुड (में कला है). अष्टपालुडमें लिंगपालुड है. द्रव्यलिंग अष्टाईस मूलगुण और पंच महाप्रत, नक्षपना और आचरणकी कडक किया, अंक दाना भी उसके लिये बनाया हो तो आहार न ले, ऐसी किया तो अनंत बार लुयी. आला..! कभी आत्मा क्या चीज है (उसका कुतूहल किया नहीं).

'मुनिप्रत धार अनंत बैर त्रैवेयक उपज्यो, पै आतमज्ञान बिन लेश सुभ न पायो.' पंच महाप्रत, अष्टाईस मूलगुण क्रियाकांड सब दुःख है. आला..! राग है, विकल्प है, दुःख है, ऊहर है. भगवान अमृतस्वरूप है. उससे विरुद्ध भाव है. अमृतस्वरूप देभनेका कुतूहल भी नहीं किया. प्रगट भवे न किया, कहते हैं. आला..! दूसरी कोई नयी चीज आये, कला न? महारानी जब घोडागाडीमें बाहर निकली थी, भावनगर. लोग देभनेके लिये (उमड पडे), रानी साहेबाने ओजल छोड दिया. रानी साहेबाने ओजल छोड दिया.

ऐसे भगवान आत्मामें रागकी अकता छोड देता है, ओजल छूट जाता है. पूरी चीज दिभनेमें आती है. आला..! उसका कुतूहल भी कभी नहीं किया, ऐसा कहते हैं. उसके सिवा दूसरी चीजकी महिभामें ठीक है, ऐसा रुककर, वहीं रुक गया है. आला..! भगवान अंक ओर रह गया. कुतूहल ही नहीं किया. २४४ (पूरा हुआ). इसके बाद २५१ है.

**द्रव्य उसे कहते हैं जिसके कार्यके लिये दूसरे साधनोंकी राह न देजना पड़े. २५१.**

२५१. बहुत अच्छी बात है, है दो पंक्ति. इसका तो बेनर बना है. इस पंक्तिका बेनर बना है. मुंभईमें, यहां है, राजकोटमें.. यह दो पंक्तिका.

‘द्रव्य उसे कहते हैं...’ आलाला..! ‘द्रव्य उसे कहते हैं...’ भगवान आत्माका द्रव्य. आलाला..! यहां तो समुच्चय द्रव्य लिया है. लेकिन द्रव्य उसे कहते हैं कि ‘जिसके कार्यके लिये...’ द्रव्यकी पर्यायके कार्यके लिये. द्रव्यकी पर्यायके कार्यके लिये. ‘दूसरे साधनोंकी राह न देजना पड़े.’ आलाला..! यह चीज है. यह वीतरागका मर्म है. तीन लोकके नाथ सर्वज्ञदेव, उनका अभिप्राय-हृदय यह है. द्रव्य उसको कहते हैं कि जिसके कार्यके लिये दूसरे द्रव्यकी, साधनकी राह देजनी पड़े, ऐसा है नहीं. आलाला..! उसमें तो कितना भरा है! आलाला..! बलिनको स्त्रीका देह आ गया न, इसलिये लोगोंको बालर किमत नहीं आती. आलाला..!

यह महा शब्द है. पदार्थ-द्रव्य उसको कहें कि उसके कार्यके लिये, जिसके कार्यके लिये-सम्यग्दर्शनके कार्यके लिये, सम्यग्ज्ञानके कार्यके लिये, सम्यक्चारित्रके कार्यके लिये, केवलज्ञानके कार्यके लिये, सिद्धपदके कार्यके लिये... यह सब कार्य है. आलाला..! ‘द्रव्य उसे कहते हैं जिसके कार्यके लिये दूसरे साधनोंकी राह न देजना पड़े.’ न देजना पड़े. आलाला..! अपनी तैयारी छोड़े तो निमित्त साधन तो जगतमें पडा ही है. राह नहीं देजनी पड़े कि यह निमित्त मिले तब मेरा कार्य होगा. ऐसा निमित्त मिले तो कार्य होगा, ऐसी राह देजनी न पड़े. प्रभु! ऐसा तेरा द्रव्य है. तेरा द्रव्य क्या, सब द्रव्य जैसे हैं. आलाला..! यह तो सामान्य परिभाषा है न.

‘द्रव्य उसे कहते हैं...’ आलाला..! तीन लोकके नाथ सर्वज्ञ भगवान द्रव्य उसे कहते हैं कि ‘जिसके कार्यके लिये...’ जिसकी पर्यायके लिये.. आलाला..! पर्याय बिनाका तो द्रव्य कभी कहीं नहीं है. तीन कालमें कोई द्रव्य पर्याय बिनाका तो है नहीं. तो वह पर्याय प्रगट करनी छो, उसमें परकी राह देजना पड़े, ऐसा है नहीं. आलाला..! वञ्जनाराय संलनन छोना चालिये, इवाना... वह तो तू कार्य करेगा यहां वह होगा ही. राह देजना नहीं पड़े. तेरे केवलज्ञानकी तैयारी यहां की, तो वञ्जनाराय संलनन, मनुष्य आदि तो होंगे ही. परद्रव्यकी राह देजना पड़े अपने कार्यके लिये, ऐसा द्रव्य है नहीं. आलाला..! यह तो द्रव्यको पराधीन, पराधीन (मान लिया है). ऐसा अमुक निमित्त मिले तो ठीक पड़े, अमुक निमित्त मिले तो ठीक पड़े. निमित्त तो

निमित्तकी पर्यायसे निमित्त आता है. द्रव्यमें कोई निकम्मा द्रव्य नहीं है. क्या कदा? द्रव्य जितने हैं, उसमें कोई निकम्मा नहीं है. निकम्मा अर्थात् पर्यायरूपी कार्य बिना वह द्रव्य रहता नहीं. जितने अनंत द्रव्य हैं, वह निकम्मे अर्थात् काम अर्थात् पर्याय, पर्यायको काम कहते हैं. कार्य कदो, काम कदो. काम-पर्याय बिना-कार्य बिना-कोई द्रव्य कहीं कभी रहता नहीं. समझमें आया?

परमाणु लो, धर्मास्तिकाय लो, आकाश लो, भगवान् आत्मा लो, अपनी पर्याय करनेमें... आलाला..! अपनी अवस्था करनेमें सम्यग्दर्शन प्रगट करनेमें, कोई गुरुकी राह देखना पड़े, चारित्र प्रगट करनेमें कोई शरीरकी मजबूताईकी जरूरत पड़े, ऐसी राह देखना न पड़े. आलाला..! सूक्ष्म बात है, प्रभु! लवे कठिन लगे. थोड़े शब्दमें बहुत लरा है. आलाला..!

तीन लोकके नाथ तीर्थकरकी पुकार है कि, द्रव्य उसे कहते हैं कि उसकी पर्यायके बिना द्रव्य कभी होता नहीं और उसकी पर्यायके लिये परद्रव्यकी राह देखनी पडती नहीं. आलाला..! गजब बात है! दो पंक्ति है. पूरे जैनदर्शनका सार है. यह तो बहिनके मुँहसे उस वक्त निकल गया. आलाला..! वस्तु उसे कहें कि अपने कार्यके लिये-अपनी पर्यायके लिये, कार्य अर्थात् पर्याय, पर्याय है वही कार्य है न, दूसरा क्या कार्य है? कोई द्रव्य निकम्मा नहीं है, उसका अर्थ कि कोई द्रव्य पर्याय बिना नहीं है. कोई द्रव्य पर्याय बिना तीन कालमें नहीं रहता. आलाला..! पर्याय बिना रहे तो, पीछाननेमें तो पर्याय ही कारण है. ध्रुव तो ध्रुव वस्तु है. पर्यायसे ही वस्तु ज्ञाननेमें आती है. आलाला..!

नजरमें द्रव्य-गुण-पर्याय तीनों ज्वालमें आते हैं. लेकिन पर्यायके ज्वालसे सबका ज्वाल आता है. यह पर्याय ठस गुणकी है, यह गुण ठस द्रव्यका है. समझमें आया? आलाला..! ऐसा उपदेश. क्या करें? आलाला..! यहां तो पर बिना चले नहीं, पर बिना चले नहीं. बहुत बार ऐसा कहते हैं, अक द्रव्यको दूसरे द्रव्य बिना चले नहीं. प्रभु! अक द्रव्यमें अनंत अस्तित्व गुण पडा है और अक द्रव्यमें उससे अनंतगुने जो द्रव्य हैं, उसका नास्तित्व पडा है. आलाला..! अनंत अस्तित्व है और अनंत नास्तित्व है. छोटे परमाणुमें भी ऐसा है, प्रभु! आलाला..! अरे..! निगोदके जव. विज्ञान मान न सके. ऐसा अक पाठ है, संप्रदायमें लम कहते थे कि जिसे यथार्थ जबर नहीं है वह अनेक प्रकारसे कलंक लगाते हैं, सत्यको कलंक लगाते हैं. अब्याज्यान कहते हैं-कलंक. ऐसा नहीं, ऐसा नहीं. ऐसा जिसने बहुत कलंक लगाया है, वह जव कहां जायेगा? कि वह जव है ऐसा नहीं माननेवाली

(गतिमें जायेगा). क्योंकि उसने बहुत क्लंक लगाया है. वह वहां जायेगा कि उसको जव मान सके नहीं, वहां जायेगा. निगोदमें जायेगा. आलाला..! भगवानके सिवा कौन कहे यह?

जो स्वयंको क्लंक लगाता है, वह सबको क्लंक लगाता है. जो सबको क्लंक लगाता है, वह स्वयंको क्लंक लगाता है, जैसा पाठ है. क्लंक अर्थात् यह नहीं, यह जैसा नहीं है. आप कहते हो जैसा नहीं है. जैसे सत्य बातको जैसा नहीं है (जैसे ना करके), असत्य बातकी हां कहकर सत्यको क्लंक लगाया, जैसा सत्य नहीं है, एनकार किया तो वह जैसे स्थानमें जायेगा, उसको दूसरा जव है जैसा मान सके नहीं. उसने सत्को क्लंक लगाया है. अपने सत्को दूसरा मान सके जैसे स्थानमें नहीं जायेगा. आलाला..! समझमें आया? आलाला..! जैसी बात है.

‘द्रव्य उसे कहते हैं...’ आलाला..! प्रभु आत्माको जैसा कहते हैं कि जिसके कार्यके लिये-सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रसे लेकर केवलज्ञान तक, अपने निर्मल कार्यके लिये, दूसरे साधनोंकी (राह देभना न पडे). आलाला..! हो, साधन साधनके कारणसे हो, लेकिन कार्यके लिये उसकी राह देभना पडे, जैसा है नहीं. इसलिये उस साधनका निषेध कर दिया है. आलाला..! अपनी स्वतंत्रता, कर्ता होकर पर्याय करता है, पर्यायमें कर्ता होकर (कार्य करता है). कर्ताकी परिभाषा यह है कि स्वतंत्रपने करे सो कर्ता. व्याकरणमें है, स्कुलमें भी है.

कर्ता उसको कहते हैं,... हमारे चौथी कक्षामें आया था, उस दिन. स्कुलमें. बहुत विस्तार है. एक पुस्तक मंगवाया था. यहां बोरिंग है न? उसमें छः ओलका अर्थ दिया है. कर्ता, कर्म, करण. कर्ता उसे कहें कि स्वतंत्रपने करे सो कर्ता. जिसको दूसरेकी मददकी अपेक्षा रहे नहीं. उसका नाम कर्ता है. प्रत्येक द्रव्यमें एक समयमें षट्कारककी परिणति होती है, अनादिअनंत. प्रति समय षट्कारककी परिणति-कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण, एक समयमें प्रत्येक द्रव्यकी, परमाणुकी पर्यायमें भी षट्कारक, सिद्धकी पर्यायमें षट्कारक. आलाला..! निगोदकी पर्यायमें षट्कारक (है). षट्कारकमें पहले कर्ता आता है. षट्कारक आते हैं न? व्याकरणमें आते हैं. स्वतंत्र कर्ता. किसीकी अपेक्षा नहीं. आलाला..!

भगवान आत्मा अपनी पूर्ण दशा प्राप्त करनेमें किसीकी अपेक्षा नहीं है. पूर्ण करनेमें थोड़ी मदद .. आलंबन मिले, गुरु आदिका, तो आगे बढ़ जाय, जैसा द्रव्य स्वभाव है नहीं. आलाला..! वाणीमें जैसा करनेमें आता है, व्यवहारमें कि गुरु मिले तो सखी बात समझमें आवे. सब व्यवहार है. व्यवहारका पार नहीं.

आलाला..! यहां द्रव्य पर दृष्टि करनेसे व्यवहारका अंत आ जाता है. आलाला..! द्रव्य ऐसा है... बहुत गहरी बात है. आलाला..! चाहे तो निगोदमें द्रव्य हो, किसीकी मददसे यहां रहा है, ऐसा नहीं. अपनी पर्यायिकी स्वतंत्रता अंक समयमें कर्ता, कर्म, करण, संप्रदानसे यहां पर्यायि हुई है. तो वह कर्ता स्वतंत्र है. निश्चयसे तो कर्ता पर्याय, द्रव्यकी अपेक्षा रहती नहीं. परंतु लक्ष्य हो जाता है. पर्यायिका लक्ष्य द्रव्य पर होता है वह स्वतंत्रपने होता है. क्या कला? पर्यायमें जो षट्कारक है, उस पर्यायिका आश्रय तो द्रव्य है. लक्ष्य तो यहां है. लेकिन वह स्वतंत्र कर्ता होकर लक्ष्य करती है. आला..! ऐसी बातें. समझमें आया?

अपनी पर्यायमें.. प्रत्येक द्रव्य. जडमें भी ऐसी बात है. परमाणुमें भी अनंत-अनंत गुण पडे हैं. अनंत गुणमें अंक समयकी पर्याय होती है. उसमें षट्कारकके परिणामनमें दूसरे गुणकी भी अपेक्षा नहीं है. आलाला..! प्रभु आत्मा... वह यीज है कि नहीं, उसकी तो जडको भबर भी नहीं. उसको ज्ञाननेवाला आत्मा तो महाप्रभु स्वतंत्र है. आलाला..! कोई भगवान उसको करता है कि कोई भगवान मिले तो कुछ हो जाय, आलाला..! ऐसा है नहीं.

‘द्रव्य उसे कहते हैं जिसके कार्यके लिये...’ कार्य अर्थात् पर्याय. कार्य अर्थात् अवस्था. कार्य अर्थात् द्रव्यकी दशा. वर्तमान उसकी दशा. उस दशा-कार्यके लिये ‘दूसरे साधनोंकी...’ उसके साधन सिवा.. क्योंकि द्रव्यमें करण-साधन नामका गुण पडा है. प्रत्येक द्रव्यमें करण-साधन नामका गुण पडा है. कर्ता, कर्म, करण गुण है. अंदर गुण पडे हैं. कर्ता गुण है, कर्म गुण है, करण गुण है. यहां पर्यायिकी बात चलती है. आत्मामें भी अंक करण नामका गुण है. ४७ शक्तिमें आता है. करण नाम साधन. अपना साधन अपनेसे होता है. अपने साधनमें परके साधनकी अपेक्षा नहीं है. आलाला..! ऐसी बात है.

‘द्रव्य उसे कहते हैं जिसके कार्यके लिये दूसरे साधनोंकी...’ आलाला..! यहां तो कहे, पर बिना चले नहीं, पर बिना चले नहीं. जैसे बिना सञ्ज मिले नहीं, जैसे बिना आहारका दाना मिले नहीं. आलाला..!

मुमुक्षु :- बेचारे निमित्तका क्या होगा?

समाधान :- निमित्त द्रव्य नहीं है? द्रव्य नहीं है? वह परकी मददकी (अपेक्षा) नहीं रहता.

‘कार्यके लिये दूसरो साधनोंकी राह न देखना पडे.’ उसका नाम यहां द्रव्य कहते हैं.

(श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)